मुसन्निफ़:

फ़क़ीह-ए-मिल्लत, ह़ज़रत अ़ल्लामा
मुफ़्ती जलालुद्दीन अ़ह़मद अमजदी
अ़लैहिर्-रह़मह

हिंदी:

शुऐब अह़मद
मिशन क़ादरी वेलफ़ेयर सोसाइटी,
मेम्बर टीम अ़ब्दे मुस्त़फ़ा ऑफ़िशियल

SABIYA
VIRTUAL PUBLICATION

मुसन्निफ़:

फ़क़ीह-ए-मिल्लत, ह़ज़रत अ़ल्लामा

मुफ़्ती जलालुद्दीन अ़ह़मद अमजदी

अ़लैहिर्-रह़मह

हिंदी:

शुऐब अह़मद

मिशन क़ादरी वेलफ़ेयर सोसाइटी,
मेम्बर टीम अ़ब्दे मुस्त़फ़ा ऑफ़िशियल

SABIYA
VIRTUAL PUBLICATION

नाम : इस्लामी तअ़लीम (दूसरा हिस्सा)

मुसन्निफ़: फ़क़ीह-ए-मिल्लत, ह़ज़रत अ़ल्लामा मुफ़्ती जलालुद्दीन अ़ह़मद अमजदी अ़लैहिर्-रह़मह

ज़ुबान : हिन्दी

हिंदी:
शुऐब अह़मद
मिशन क़ादरी वेलफ़ेयर सोसाइटी,
मेम्बर टीम अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

कम्पोज़िंग : अ़ब्दे मुस्तफ़ा साबिर इस्माईली

पब्लिशर : साबिया वर्चुअल पब्लिकेशन

माह व सना इशाअ़त : अगस्त 2021

सफहा़त : 45

किताबुल्-ईमान

इस्लामी अ़क़ाइद का बयान:

सवाल: आप कौन हैं?
जवाब: मुसलमान।

सवाल: मुसलमान किसे कहते हैं?
जवाब: दीने इस्लाम के मानने वाले को मुसलमान कहते हैं।

सवाल: दीने इस्लाम क्या चीज़ है?
जवाब दीने इस्लाम वो रास्ता है जिसके ज़रिया अल्लाह तआ़ला की पहचान होती है।

सवाल: ये रास्ता इंसान को किस से मिलता है?
जवाब: अल्लाह तआ़ला के भेजे हुए पैग़म्बरों से।

सवाल: इस्लाम की बुनियाद कितनी चीज़ों पर है?
जवाब: इस्लाम की बुनियाद पाँच चीज़ों पर है।

सवाल: वो पाँच चीज़े क्या हैं?
जवाब: अव्वल कलिमा-ए-शहादत का ज़ुबान से इक़रार करना और दिल से मानना। दूसरे, नमाज़ पढ़ना, तीसरे, ज़कात देना चौथे, रमज़ान के महीना का रोज़ा रखना और पांचवें हृज करना।

सवाल: कलिमा-ए-शहादत किया है और उस का मत़लब किया है?
जवाब : कलिमा-ए-शहादत ये है:

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا

عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

और उस का मत़लब ये है कि: मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि ह़ज़रत मुहम्मद मुस्त़फ़ा ﷺ अल्लाह तआ़ला के प्यारे बंदे और उस के रसूल हैं।

सवाल: अगर कोई शख़्स कलिमा-ए-शहादत ज़ुबान से पढ़ता है लेकिन दिल से नहीं मानता तो ऐसा शख़्स मुसलमान है या नहीं?
जवाब: ऐसा शख़्स हरगिज़ मुसलमान नहीं है।

सवाल: ईमान किसे कहते हैं?
जवाब: जितनी बातें हुज़ूर अक़्दस ﷺ अल्लाह की त़रफ़ से लाए हैं उन सबको ह़क़ मानना ईमान है।

सवाल: मुसलमानों को कितनी बातों पर ईमान लाना ज़रूरी है?
जवाब: सात बातों पर ईमान लाना ज़रूरी है जिसका बयान इस ईमाने मुफ़स्सल में है:

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ وملائكته وَكُتُبِه وَرَسُوْلِه وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْقَدْرِ

خَيْرِه وَشَرِّه مِنَ اللّٰهِ تَعَالٰى وَالْبَعْثِ بَعْدَ الْمَوْتِ

इस का तर्जुमा ये है कि:
ईमान लाया में अल्लाह तआ़ला पर और उस के फ़रिश्तों पर और उस की किताबों पर और उस के रसूलों पर और क़ियामत के दिन पर और इस बात पर कि तक़दीर की अच्छाई और बुराई अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से है और में इस बात पर ईमान लाया कि मरने के बाद फिर दुबारा ज़िंदा होना है।

सवाल: कुफ़्र किसे कहते हैं?
जवाब! दीन की ज़रूरी बातों में से किसी बात का इनकार करना कुफ़्र है।

अल्लाह तआ़ला

सवाल: अल्लाह तआ़ला के बारे में हमें कैसा अक़ीदा रखना चाहिए?
जवाब: अल्लाह तआ़ला एक है पाक और बे-ऐ़ब है इ़बादत के लाइक़ सि़र्फ़ वही है उस के सिवा और कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं वो हमेशा से है और हमेशा रहेगा, उस का कोई शरीक नहीं, ज़मीन, आसमान, चांद, सूरज, दरिया और पहाड़ सारी दुनिया को अकेले उसी ने पैदा फ़रमाया और वही सब का मालिक है। अमीर और ग़रीब बनाना उस के इख़्तियार में है। अगर वो ना चाहे तो एक पत्ता नहीं हिल सकता, वही सबको ज़िंदगी देता है और उस के हुक्म से मौत होती है। माँ बाप, बेटा, बेटी और बीवी वग़ैरह रिश्ता नाता से

पाक है। ना वो खाता है ना पीता है ना सोता है ना ऊँघता है। उस की कोई शक्लो सूरत नहीं। बे-मिसाल है। मकान और जगह से पाक है।

सवाल: अल्लाह तआ़ला को अल्लाह मियां कहना चाहिए या नहीं?
जवाब:अल्लाह मियां नहीं कहना चाहिए कि मना है।

सवाल: ख़ालिक़, रज़्ज़ाक़, रहमान और क़य्यूम किस का नाम है?
जवाब: ये सब नाम अल्लाह तआ़ला के हैं।

सवाल: जिन लोगों का नाम अब्दुल खालिद अब्दुल रज़्ज़ाक़ अब्दुर रहमान अब्दुल कय्यूम है उनको ख़ालिक़ रज़्ज़ाक़, रहमान, क़य्यूम कह कर पुकारते हैं क्या ऐसा करना जाइज़ है?
जवाब: ऐसा करना ह़राम है।

अल्लाह तआ़ला के फ़रिश्ते

सवाल: फ़रिश्ते क्या चीज़ हैं?
जवाब: फ़रिश्ते इंसान की त़रह अल्लाह तआ़ला की एक मख़लूक़ हैं लेकिन वो नूर से पैदा किए गए। ना मर्द हैं ना औरत हैं ना कुछ खाते हैं ना पीते हैं। जितने काम अल्लाह तआ़ला ने उनके सपुर्द कर दिए हैं उस में लगे रहते हैं। कुछ फ़रिश्ते बंदों का अच्छा बुरा अ़मल लिखने पर मुक़र्रर हैं। बाअ़ज़ फ़रिश्तों का काम क़ब्र में मर्दों से

सवाल करना है और कुछ फ़रिश्ते हुज़ूर सय्यादे आ़लिम ﷺ के दरबार में मुसलमानों के दुरूदो सलाम पहचाने पर मुक़र्रर हैं।

सवालः जो फ़रिश्ते बंदों का अच्छा और बुरा काम लिखने पर मुक़र्रर हैं उनका नाम किया है?
जवाबः उनको किरामन कातबीन कहते हैं।

सवालः जो फ़रिश्ते मर्दों से क़ब्र में सवाल करने के लिए आते हैं उन्हें क्या कहते हैं?
जवाबः उन्हें मुनकिर नकीर कहते हैं।

सवालः फ़रिश्ते कितने हैं।
जवाबः बे-हिसाब और बे-शुमार हैं, उनकी तअ़दाद सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला जानता है और उस के बताने से प्यारे मुस्त़फ़ा ﷺ जानते हैं। अलबत्ता उनमें चार फ़रिश्ते बहुत मशहूर हैं।

सवालः वो चार फ़रिश्ते कौन हैं?
जवाबः अव्वल ह़ज़रते जिब्रील अ़लैहिस्सलाम जो अल्लाह तआ़ला की किताबें और उस के अह़काम पैग़म्बरों तक पहुंचाते थे। दूसरे ह़ज़रते इस्राफ़ील अ़लैहिस्सलाम जो क़यामत के दिन सूर फूंकेंगे। तीसरे ह़ज़रते मीकाईल अ़लैहिस्सलाम जो पानी बरसाने और रोज़ी पहुंचाने पर मुक़र्रर हैं और चौथे ह़ज़रते इज़्राईल अ़लैहिस्सलाम जो लोगों की जान निकालने पर मुक़र्रर हैं।

अल्लाह तआ़ला की किताबें

सवाल: अल्लाह तआ़ला की किताबें कितनी हैं?
जवाब: अल्लाह तआ़ला की छोटी बड़ी बहुत सी किताबें नाज़िल हुईं बड़ी किताब को किताब और छोटी को स़ह़ीफ़ा कहते हैं। उनमें चार किताबें बहुत मशहूर हैं।

सवाल: चार मशहूर किताबें कौन सी और किन पैग़म्बरों पर नाज़िल हुईं?
जवाब: पहली तौरैत जो ह़ज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम पर नाज़िल हुई। दूसरी ज़बूर जो ह़ज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम पर नाज़िल हुई। तीसरी इंजील जो ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम पर नाज़िल हुई और चौथी क़ुरआन मजीद जो हमारे नबी हुज़ूर सय्यदे आ़लम ﷺ पर नाज़िल हुआ।

सवाल: क्या ये किताबें आज भी दुनिया में मिलती हैं?
जवाब: सब किताबें मिलती हैं लेकिन क़ुरआन मजीद के इलावा हर किताब में नस़रानियों और यहूदियों ने अपनी त़रफ़ से घटा बढ़ा दिया है।

सवाल: क्या क़ुरआन मजीद में किसी ने कुछ नहीं घटाया या बढ़ाया है?

जवाबः नहीं हरगिज़ नहीं क़ुरआन मजीद जैसा हुज़ूर ﷺ के ज़ाहिरी ज़माना में था वैसा ही आज भी है एक ह़र्फ़ का भी फ़र्क़ नहीं हुआ। और ना क़ियामत तक फ़र्क़ हो सकता है।

सवालः क़ुरआन मजीद में क्यों फ़र्क़ नहीं हो सकता?
जवाबः इसलिये कि उस की ह़िफ़ाज़त का अल्लाह तआ़ला ने वादा फ़रमाया है।

सवालः कुल स़ह़ीफ़े कितने नाज़िल हुए और किन पैग़म्बरों पर नाज़िल हुए?
जवाबः स़ह़ीफ़ों की तअ़दाद सि़र्फ़ अल्लाह तआ़ला और उस के बताने से प्यारे मुस्त़फ़ा ﷺ जानते हैं? कुछ स़ह़ीफ़े ह़ज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम पर नाज़िल हुए, कुछ ह़ज़रत शीस अ़लैहिस्सलाम पर, कुछ ह़ज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम पर नाज़िल हुए। इनके इलावा और स़ह़ीफ़े बाअ़ज़ पैग़म्बरों पर नाज़िल हुए।

रसूल और नबी

सवालः रसूल और नबी कौन होते हैं?
जवाबः रसूल और नबी ख़ुदा-ए-तआ़ला के प्यारे बंदे और इंसान होते हैं। अल्लाह तआ़ला ने उनको इंसान की हिदायत के लिए दुनिया में भेजा है। वो बंदों तक अल्लाह तआ़ला का पैग़ाम पहुंचाते

हैं। मोअ़जिज़े दिखाते हैं और ग़ैब की बातें बताते हैं झूट कभी नहीं बोलते वो हर गुनाह से पाक होते हैं।

सवाल: क्या फ़रिश्ते भी नबी होते हैं?
जवाब: नहीं, नबी सि़र्फ़ इंसानों में से होते हैं।

सवाल: नबी कितने हैं?
जवाब: कुछ कमो बेश एक लाख चौबीस हज़ार या तक़रीबन दो लाख चौबीस हज़ार नबी हैं उनकी ठीक तअ़दाद अल्लाह तआ़ला को मअ़लूम है फ़िर उस के बताने से प्यारे मुस्त़फ़ा ﷺ जानते हैं।

सवाल: सबसे पहले नबी कौन हैं?
जवाब: सबसे पहले नबी ह़ज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम हैं।

सवाल: सबसे आख़िरी नबी कौन हैं?
जवाब: सबसे आख़िरी नबी हमारे पैग़ंबर जनाब अह़मद-ए-मुज्तबा मुह़म्मद मुस्त़फ़ा ﷺ हैं।

सवाल: अब कोई नबी होगा या नहीं?
जवाब: अब कोई नबी नहीं होगा इस लिये कि नबुव्वत हमारे सरकार ह़ज़रत मुह़म्मद मुस्त़फ़ा ﷺ पर ख़त्म हो गई हुज़ूर ﷺ के बाद जो शख़्स नबी पैदा होने को जाइज़ समझे वो काफ़िर है।

सवाल: रसूलों में सबसे अफ़ज़ल रसूल कौन हैं?

जवाबः नबियों और रसूलों में सबसे अफ़ज़ल और बुज़ुर्गो बर-तर हमारे सरकार ह़ज़रत मुह़म्मद मुसत़फ़ा ﷺ हैं । अल्लाह तआ़ला के बाद आपका मर्तबा सबसे बड़ा है।

सवालः नबी के नाम पर सौद (ص) लिखना चाहिए या नहीं?
जवाबः पूरा दुरुद ﷺ लिखना चाहिए सौद (ص)अम(عم)सलअम(صلعم) वग़ैरह नबी के नाम पर लिखना ह़राम है। (बहारे शरीअ़त)

क़ियामत का बयान

सवालः क़ियामत किसी दिन को कहते हैं
जवाबः क़ियामत उस दिन को कहते हैं जिसमें सब आदमी और तमाम जानवर मर जाऐंगे आसमान, ज़मीन, चांद, सूरज, पहाड़ दुनिया की हर चीज़ टूट-फूट कर ख़त्म हो जाएगी यहां तक कि तमाम फ़रिश्ते भी फ़ना हो जाएंगे।

सवालः तमाम आदमी और फ़रिश्ते वग़ैरह कैसे फ़ना हो जएंगे?
जवाबः ह़ज़रत इस्त्राफ़ील अ़लैहिस्सलाम सूर फूंकेंगे लोग सूर की आवाज़ सुनेंगे तो बेहोश हो कर गिर पड़ेंगे और मर जाएंगे यहां तक कि सूर भी ख़त्म हो जाएगा और इस्त्राफ़ील अ़लैहिस्सलाम भी फ़ना हो जायेंगे।

सवाल: सूर क्या चीज़ है?
जवाब: सींग के शक्ल की एक चीज़ है?

सवाल: क़ियामत कब आएगी?
जवाब: क़ियामत आने का ठीक वक़्त सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला को मअ़लूम है फिर उस के बताने से प्यारे मुस्त़फ़ा ﷺ जानते हैं। हमें इतना मअ़लूम है कि मुह़र्रम की दसवीं तारीख़ होगी और जुमअ़ का दिन होगा। अलबत्ता हमारे सरकार ह़ज़रत मुह़म्मद मुस्त़फ़ा ﷺ ने क़ियामत की बहुत सी निशानीयों को बयान फ़र्मा दिया है उन निशानीयों को देखकर क़ियामत का क़रीब होना मअ़लूम हो जाएगा।

सवाल: क़ियामत की कुछ निशानीयां बयान कीजिए?
जवाब: जब दुनिया में गुनाह ज़्यादा होने लगे ह़राम कामों को लोग खुल्लम-खुल्ला करने लगें, माँ बाप को तकलीफ़ दें और ग़ैरों से मेल-जोल रखें, अमानत में ख़ियानत करें, ज़कात देना लोगों पर गिरां गुज़रे, इल्मे दीन, दुनिया ह़ासि़ल करने के लिए पढ़ा जाए नाच-गाने का रिवाज ज़्यादा हो जाये बदकार लोग क़ौम के पेशवा और लीडर हो जाएं चरवाहे वग़ैरह कम दर्जा के लोग बड़ी बड़ी बिल्डिंगों और कोठियों में रहने लगें ज़लज़ले और भूंचाल आने से ज़मीन धंसे तो समझ लो क़ियामत क़रीब आगई।

तक़दीर का बयान

सवालः तक़दीर किसे कहते हैं?

जवाबः दुनिया में जो कुछ हुआ है और बंदे जो कुछ भलाई और बुराई करते हैं ख़ुदा-ए-तआ़ला ने उसे अपने इल्म के मुवाफ़िक़ पहले से लिख लिया है उसे तक़दीर कहते हैं।

सवालः क्या अल्लाह तआ़ला ने जैसा हमारी तक़रीर में लिख दिया है। हमें मजबूरन वैसा करना पड़ता है?

जवाबः नहीं, अल्लाह तआ़ला के लिख देने से हमें मजबूरन वैसा नहीं करना पड़ता है बल्कि हम जैसा करने वाले थे अल्लाह तआ़ला ने अपने इल्म से वैसा लिख दिया अगर किसी की तक़रीर में बुराई लिखी तो इसलिए कि वो बुराई करने वाला था अगर वो भलाई करने वाला होता तो अल्लाह तआ़ला उस की तक़दीर में भलाई लिखता। ख़ुलासा ये कि अल्लाह तआ़ला के लिख देने से बंदा किसी काम के करने पर मजबूर नहीं किया गया।

मरने के बाद ज़िंदा होना

सवालः मरने के बाद ज़िंदा होने से किया मुराद है?

जवाबः क़ियामत के दिन जब ज़मीन आसमान, इंसान और फ़रिश्ते वग़ैरह सब फ़ना हो जाएंगे फिर अल्लाह तआ़ला जब चाहेगा तो ह़ज़रत इस्राफ़ील अ़लैहिस्सलाम को ज़िंदा फ़रमाएगा। वो दुबारा सूर फूंकेंगे तो सब चीज़ें मौजूद हो जाएँगी। फ़रिश्ते और आदमी वग़ैरह सब जिंदा हो जाएंगे। मुर्दे अपनी अपनी क़ब्रों से उठेंगे हश्र के मैदान में अल्लाह तआ़ला के सामने पेश होगी। ह़िसाब लिया जाएगा और हर शख़्स को अच्छे बुरे कामों का बदला दिया जाएगा। यानी अच्छे लोगों को जन्नत मिलेगी और बुरुँ को जहन्नम में भेज दिया जाएगा।

सवालः जो ईमाने मुफ़स्सल की सब बातों को दिल से माने और जुबान से इक़रार करे
लेकिन नमाज़ ना पढ़े, रोज़ा ना रखे, ज़कात ना दे और ह़ज ना करे तो वो मुसलमान है या नहीं?
जवाबः मुसलमान तो है लेकिन सख़्त गुनहगार और अल्लाह तआ़ला व रसूल ﷺ का ना-फ़रमान है ऐसे शख़्स को फ़ासिक़ और फ़ाजिर कहते हैं।

सवालः जो नमाज़ रोज़ा वग़ैरह का पाबंद हो
ईमाने मुफ़स्सल की सब बातों को दिल से मानता हो लेकिन हुज़ूर सैय्यदे आ़लम ﷺ की शान में गुस्ताख़ी और बे-अदबी करता हो तो वो मुसलमान है या नहीं?

जवाबः वो मुसलमान नहीं है ऐसा शख़्स काफ़िरो मुर्तद है

सवालः जो शख़्स हुज़ूर अक़्दस ﷺ की शान मैं ख़ुद गुस्ताख़ी ना करे लेकिन गुस्ताख़ी करने वाले को जान-बूझ कर मुसलमान समझे तो वो कैसा है?

जवाब : वो भी काफ़िर और मुर्तद है।

किताबुल् अ़ामाल

नमाज़ का बयान

सवालः नमाज़ शुरु करने से पहले किन चीज़ों की ज़रूरत है?

जवाबः नमाज़ शुरु करने से पहले सात बातों की ज़रूरत है।

सवालः वो सात बातें क्या हैं?

जवाबः अव्वल बदन का पाक होना, दूसरे, कपड़ों का पाक होना, तीसरे नमाज़ की जगह का पाक होना, चौथे सत्रे औरत। पांचवें नमाज़ का वक़्त होना। छठे क़िब्ला की तरफ़ मुँह करना। सातवीं नमाज़ की नीयत करना। इन सात बातों को शराइते नमाज़ कहते हैं।

नमाज़ की पहली शर्त

सवालः बदन पाक होने का मत़लब किया है

जवाबः बदन पाक होने का मत़लब ये है कि बदन पर नजासते ह़क़ीक़िय्या और नजासते हुकमिय्या ना पाई जाए।

सवालः नजासत की कुल कितनी क़िस्में हैं
जवाबः नजासत की दो क़िस्में हैं
(1) नजासते ह़क़ीक़िय्या (2) नजासते हुकमिय्या।

सवालः नजासते ह़क़ीक़िय्या किसे कहते हैं?
जवाबः नजासते ह़क़ीक़िय्या वो नजासत है जो देखने में आ सके जैसे पाख़ाना, पेशाब

सवालः नजासते हुकमिय्या किसे कहते हैं?
जवाबः नजासते हुकमिय्या वो नजासत है जो शरीअ़त के बताने से साबित हो मगर देखने में ना आ सके जैसे वो ह़ालतें कि जिनकी वजह से आदमी पर ग़ुस्ल या वुज़ू ज़रूरी हो जाता है पर नजासते हुकमिय्या की दो क़िस्में हैं, ह़दसे असग़र, ह़दसे अकबर।

सवालः ह़दसे असग़र से बदन कब पाक होगा
जवाबः जब आदमी वुज़ू करे ले तो उस का बदन हदसे असग़र से पाक हो जाएगा।

वुज़ू का बयान

सवालः वुज़ू किसे कहते हैं?

जवाबः गट्टों समेत दोनों हाथ धोना, कुल्ली करना, नाक में पानी डालना, मुँह धोना, कोहनियों समेत दोनों हाथ धोना, सर का मसह़ करना और टख़नों समेत दोनों पाँव धोना। इस का नाम वुज़ू है। जिसका त़रीक़ा तुम "इस्लामी तअ़लीम" के ह़िस्स़ा अव्वल में पढ़ चुके हो।

सवालः क्या वुज़ू में ये सब बातें ज़रूरी हैं?
जवाबः नहीं बल्कि स़िर्फ़ बाअ़ज़ बातें ज़रूरी हैं जिन्हें फ़र्ज़ कहते हैं, उनके छूट जाने से वुज़ू नहीं होता और बाअ़ज़ बातें सुन्नत हैं जिनके छूट जाने से वुज़ू हो जाता है मगर नाक़िस़ होता है और बाअ़ज़ बातें मुस्तह़ब हैं जिनके करने से सवाब बढ़ जाता है और छूट जाने से वुज़ू में कोई ख़राबी नहीं होती।

सवालः वुज़ू में कितनी चीज़ें फ़र्ज़ हैं?
जवाबः वुज़ू में चार चीज़ें फ़र्ज़ हैं। अव्वल मुँह धोना यानी बाल निकलने की जगह से ठुड्डी के नीचे तक और एक कान की लो से दूसरे कान की लो तक। दूसरे कोहनियों समेत दोनों हाथ धोना, तीसरे चौथाई सर का मसह़ करना, यानी भीगा हुआ हाथ फेरना चौथे दोनों पाँव टख़नों समेत धोना।

सवालः वुज़ू में सुन्नतें कितनी हैं?
जवाबः वुज़ू में सुन्नतें सोलह (16) हैं। (1) नीयत करना (2) बिस्मिल्लाहिर् रह़्मानिर् रह़ीम से शुरू करना।

(3) दोनों हाथों को गट्टों तक तीन बार धोना (4) मिस्वाक करना (5) दाहने हाथ से तीन कुल्लियाँ करना (6) दाहने हाथ से तीन बार नाक में पानी चढ़ाना (7) बाएं हाथ से नाक साफ़ करना (8) दाढ़ी का ख़िलाल करना (9) हाथ पांव की उंगलीयों का ख़िलाल करना (10) हर उ़ज़्व को तीन तीन बार धोना (11) पूरे सर का मसह़ करना (12) कानों का मसह़ करना (13) तरतीब से वुज़ू करना (14) दाढ़ी के जो बाल मुँह के दायरे के नीचे हैं उनका मसह़ करना (15) आज़ा को पै दर पै धोना यानी एक उ़ज़्व ख़ुशक होने से पहले दूसरे को धोना (16) हर मकरुह बात से बचना।

सवाल:वुज़ू में कितनी बातें मुस्तह़ब हैं?
जवाब: वुज़ू में पैंसठ बतें मुस्तह़ब हैं जिनको तुम "बहारे शरीअ़त में पढ़ोगे।

सवाल: मकरुह से किया मुराद है
जवाब: मकरुह वो चीज़ है जिसके करने से वुज़ू हो जाता है मगर नाक़िस़ होता है।

सवाल: वुज़ू में कितनी बातें मकरुह हैं।
जवाब: वुज़ू में इक्कीस बातें मकरुह हैं। (1) औ़रत के ग़ुस्ल या वुज़ू के बच्चे हुए पानी से वुज़ू करना (2) वुज़ू के लिए नजिस जगह बैठना (3) नजिस जगह वुज़ू का पानी गिराना (4) मस्जिद के अंदर वुज़ू करना (5) वुज़ू के आज़ा से बर्तन में क़तरे टपकाना (6) पानी में रेंठ

या खंखार कंकर डालना (7) क़िब्ला की त़रफ़ थूक या खंखार डालना या कुल्ली करना (8) बे-ज़रूरत दुनिया की बात करना (9) ज़रूरत से ज़्यादा पानी ख़र्च करना (10) पानी इस क़दर कम ख़र्च करना कि सुन्नत अदा ना हो (11) मुँह पर पानी मारना (12) मुँह पर पानी डालते वक़्त फूंकना (13) सिर्फ़ एक हाथ से मुँह धोना (14) गले का मसह़ करना (15) बाएं हाथ से कुल्ली करना या नाक में पानी डालना (16) दाहने हाथ से नाक स़ाफ़ करना (17) अपने लिए कोई लौटा वग़ैरह ख़ास कर लेना (18) तीन नए पानियों से तीन बार सर का मसह़ करना (19) जिस कपड़े से इस्तिंजा का पानी ख़ुशक क्या हो उस से आज़ा-ए-वुज़ू पूछना (20) धूप के गर्म पानी से वुज़ू करना (21) किसी सुन्नत को छोड़ देना।

सवाल: किन चीज़ों से वुज़ू टूट जाता है?

जवाब: (1) पाख़ाना करना (2) पेशाब करना (3) पाख़ाना पेशाब के रास्ते से किसी और चीज़ का निकलना (4) पाख़ाना के रास्ता से हवा निकलना (5) बदन के किसी मक़ाम से ख़ून या पीप निकल कर ऐसी जगह बहना कि जिसका वुज़ू या ग़ुस्ल में धोना फ़र्ज़ है (6) खाना पानी या सुफ़रा की मुँह भर क़य आना (7) इस त़रह़ सो जाना कि जिस्म के जोड़ ढीले पड़ जाएं (8) बेहोश होना (9) जुनून होना (10) ग़शी होना (11) किसी चीज़ का इतना नशा होना कि चलने में पांव लड़खड़ाएं (12) रुकू और सजदा वाली नमाज़ में इतनी

ज़ोर से हंसना कि आस पास वाले सुनें (13) दुखती आँख से आँसू बहना। इन तमाम बातों से वुज़ू टूट जाता है।
(फ़तावा आ़लमगीर, बहारे शरीअ़त)

ग़ुस्ल का बयान

सवालः ह़दसे अकबर से बदन कैसे पाक किया जाता है?
जवाबः ग़ुस्ल करने से बदन ह़दसे अकबर से पाक हो जाता है।

सवालः ग़ुस्ल किसे कहते हैं?
जवाबः नहाने को ग़ुस्ल कहते हैं। उस का शरई त़रीक़ा ये है कि पहले ग़ुस्ल की नीयत कर के दोनों हाथ गट्टों तक तीन बार धोए फिर इस्तिन्जा की जगह धोए उस के बाद बदन पर अगर कहीं नजासते ह़क़ीक़िय्या यानी पेशाब या पाख़ाना वग़ैरह हो तो उसे दूर करे फिर नमाज़ जैसा वुज़ू करे मगर पांव ना धोए हाँ अगर चौकी या पत्थर वग़ैरह ऊंची चीज़ पर नहाये तो पांव भी धोले। उस के बाद बदन पर तेल की त़रह़ पानी चपड़े। फिर तीन मर्तबा दाहिने कंधे पर पानी बहाए और फिर तीन मर्तबा बाएं कंधे पर और फिर सर और तमाम बदन पर तीन बार पानी बहाए। तमाम बदन पर हाथ फेरे और मले और फिर नहाने के बाद फ़ौरन कपड़ा पहन ले। (बहारे शरीअ़त)

सवालः ग़ुस्ल में कितनी बातें फ़र्ज़ हैं?

जवाबः ग़ुस्ल मैं तीन बातें फ़र्ज़ हैं। (1) कुल्ली करना (2) नाक में पानी डालना (3) तमाम ज़ाहिर बदन पर सर से पांव तक पानी बहाना।

सवालः ग़ुस्ल में कितनी बातें सुन्नत हैं?
जवाबः ग़ुस्ल में ये बातें सुन्नत हैं। (1) ग़ुस्ल की नीयत करना। (2) दोनों हाथ गट्टों तक तीन बार धोना (3) इस्तिन्जा की जगह धोना (4) बदन पर जहां कहीं नजासत हो उसे दूर करना (5) नमाज़ जैसा वुज़ू करना (6) बदन पर तेल की त़रह़ पानी चुपड़ना (7) दाहने मूँढे पर फिर बाएं मूँढे फिर सर पर और तमाम बदन पर तीन बार पानी बहाना (8) तमाम बदन पर हाथ फेरना और मलना (9) नहाने में क़िब्ला रुख़ ना होना और कपड़ा पहन कर नहाता हो तो ह़र्ज नहीं 10) ऐसी जगह नहाना कि कोई ना देखे (11) नहाते वक़्त किसी क़िस्म का कलाम ना करना (12) कोई दुआ़ ना पढ़ना (13) औरतों को बैठ कर नहाना (14) नहाने के बाद फ़ौरन कपड़ा पहन लेना।
(फ़तावा आ़लमगीरी, दुर्रे मुख़्तार, बहारे शरीअ़त)

इस्तिन्जा का बयान

सवालः इस्तिन्जा किसे कहते हैं?
जवाबः पेशाब या पाख़ाना करने के बाद बदन पर जो नजासत लगी रहती है उस के पाक करने को इस्तिन्जा कहते हैं।

सवालः पेशाब के बाद इस्तिन्जा का त़रीक़ा किया है?
जवाबः पेशाब करने के बाद पाक मिट्टी या कंकर या फटे पुराने कपड़े से पेशाब सुखाएं फिर पानी से धो डाले।

सवालः पाख़ाना के बाद इस्तिन्जा करने का त़रीक़ा किया है?
जवाबः पाख़ाना के बाद मिट्टी, कंकर या पत्थर के तीन या पाँच या सात टुकड़ों से पाख़ाना की जगह स़ाफ़ करे फिर पानी से धो डाले।

सवालः इस्तिन्जा का ढीला और पानी किस हाथ से इस्तिमाल करना चाहिए?
जवाबः बाएं हाथ से।

सवालः किन चीज़ों से इस्तिन्जा करना मना है?
जवाबः किसी क़िस्म का खाना, हड्डी, गोबर कोयला और जानवर का चारा इन सब चीज़ों से इस्तिन्जा करना मना है। (बहारे शरीअ़त)

सवालः किन जगहों पर पेशाब पाख़ाना करना मना है?
जवाबः कुँएं या हौज़ या चशमा के किनारे पानी में अगरचे बहता हुआ हो, घाट पर, फलदार दरख़्त के नीचे, ऐसे खेत में कि जिसमें खेती मौजूद हो, साया में जहां लोग उठते बैठते हों। मस्जिद या ईदगाह के पहलू में क़ब्रिस्तान या रास्ता में। जिस, जगह जानवर बंधे हों और जहां वुज़ू या ग़ुस्ल किया जाता हो इन सब जगहों में पाख़ाना या पेशाब करना मना है।
(बहारे शरीअ़त वग़ैरह)

सवालः पाख़ाना या पेशाब करते वक़्त मुँह किस त़रफ़ होना चाहिए?
जवाबः पाख़ाना पेशाब करते वक़्त क़िब्ला की त़रफ़ मुँह या पीठ करना मना है हमारे मुल्क के रहने वालों को शुमाल या जुनूब की जानिब मुँह करना चाहिए।

पानी का बयानः

सवालः किन पानियों से वुज़ू करना जाइज़ है?
जवाबः बरसात का पानी, नदी नाले चश्मे समुंद्र दरिया और कुएं का पानी, पिघली हुई बर्फ़ या ओले का पानी, तालाब या बड़े ह़ौज़ का पानी इन सब पानियों से वुज़ू करना जाइज़ है।
(बहारे शरीअ़त वगै़रह)

सवालः किन पानियों से वुज़ू करना जाइज़ नहीं
जवाबः फल और दरख़्त का निचोड़ा हुआ पानी या वो पानी जिसमें कोई पाक चीज़ मिल गई और नाम बदल गया जैसे शर्बत, शोरबा चाय वग़ैरह या बड़े ह़ौज़ और तालाब का ऐसा पानी कि जिसका रंग या बू या मज़ा किसी नापाक चीज़ के मिल जाने से बदल गया और छोटे ह़ौज़ या घड़े का वो पानी कि जिसमें कोई नापाक चीज़ गिर गई हो या कोई ऐसा जानवर गिर कर मर गया हो कि जिसमें बहता हुआ ख़ून हो अगरचे पानी का रंग या बू या मज़ा ना बदला

हो और वो पानी कि जो वुज़ू या ग़ुस्ल का धोवन है इन सब पानियों से वुज़ू करना जाइज़ नहीं। (बहारे शरीअ़त वग़ैरह)

सवाल: दूध से वुज़ू करना जाइज़ है या नहीं
जवाब: दूध से वुज़ू करना जाइज़ नहीं। हाँ अगर उस में इतना पानी मिल गया कि दूध का नाम बदल कर पानी हो गया तो अब उस से वुज़ू करना जाइज़ है। (बहारे शरीअ़त वग़ैरह)

सवाल :क्या वुज़ू और ग़ुस्ल के पानी में कुछ फ़र्क़ है?
जवाब: नहीं, जिन पानियों से वुज़ू जाइज़ है उनसे ग़ुस्ल भी जाइज़ है और जिन पानियों से वुज़ू नाजाइज़ है ग़ुस्ल भी नाजाइज़ है। (फ़तावा आ़लमगीरी, दुर्रे मुख़्तार, बहारे शरीअ़त)

सवाल: किन जानवरों का झूटा पाक है?
जवाब: जिन जानवरों का गोश्त खाया जाता है उनका झूटा पाक है जैसे गाय, बैल, भैंस, बकरी, कबूतर और फ़ाख़ता वग़ैरह।

सवाल: किन जानवरों का झूटा मकरूह है?
जवाब: घर में रहने वाले जानवर जैसे बिल्ली, चूहा, साँप छिपकली और उड़ने वाले शिकारी जानवर जैसे शिकरा, बाज़, बहरी चील और कव्वा वग़ैरह और वो मुर्ग़ी जो छूटी फिरती हो। और नजासत पर मुँह डालती हो और वो गाय जिसकी आ़दत ग़लीज़ खाने की हो उन सब का झूटा मकरूह है।
(फ़तावा आ़लमगीरी, बहारे शरीअ़त)

सवालः किन जानवरों का झूटा नापाक है?
जवाबः सुअर, कुत्ता, शेर, चीता, भेड़ीया, हाथी, गीदड़ और दूसरे शिकारी चौपाए का झूटा नापाक है। (बहारे शरीअ़त वग़ैरह)

कुँएँ का बयानः

सवालः कुआँ कैसे नापाक हो जाता है?
जवाबः कुँएँ में आदमी, बैल, भैंस या बकरी मर जाए या किसी क़िस्म की कोई नापाक चीज़ गिर जाए तो कुआँ नापाक हो जाता है।

सवालः अगर कुँएँ में मरा हुआ जानवर पाया गया और ये मअ़लूम नहीं कब गिरा है तो कुआँ कब से नापाक माना जाएगा?

जवाबः जिस वक़्त देखा जाएगा उसी वक़्त से कुआँ नापाक माना जाएगा। (बहारे शरीअ़त)

सवालः कुँएँ में अगर कोई जानवर गिर जाए और ज़िंदा निकाल लिया जाये तो कुआँ नापाक होगा या नहीं?
जवाबः अगर कोई ऐसा जानवर गिरा कि जिसका झूटा नापाक है। जैसे कुत्ता और गीदड़ वग़ैरह तो कुआँ नापाक हो जाएगा और अगर वो जानवर गिरा कि जिसका झूटा नापाक नहीं जैसे गाय और बकरी वग़ैरह और उनके बदन पर नजासत भी लगी हो तो गिर कर

ज़िंदा निकल आने की सूरत में जब तक उनके पाख़ाना पेशाब कर देने का यक़ीन ना हो कुआँ नापाक ना होगा। (बहारे शरीअ़त)

सवाल: कुआँ अगर नापाक हो जाए तो कितना पानी निकाला जाएगा?
जवाब: अगर कुँएँ में नजासत पड़ जाए या आदमी, बैल, भैंस बकरी या इतना ही बड़ा कोई दूसरा जानवर गिर कर मर जाए या दो बिल्लियां मर जाएं या मुर्ग़ी और बत्तख़ की बीट गिर जाए। या मुर्ग़ा मुर्ग़ी, बिल्ली चूहा छिपकली या और कोई बहते हुए ख़ून वाला जानवर कुँएँ में मरकर फूल जाय या फट जाए या ऐसा जानवर गिर जाए कि जिसका झूटा नापाक है अगरचे जिंदा निकल आए जैसे सुअर और कुत्ता वग़ैरह तो इन सब सूरतों में कुल पानी निकाला जाएगा।

सवाल: अगर चूहा या बिल्ली कुँएँ में गिर कर मर जाए और फूलने फटने से पहले निकाल ली जाए तो क्या हुक्म है?
जवाब: चूहा छछूँदर, गौरय्या, चिड़िया, छिपकली, गिरगिट या उनके बराबर या उनसे छोटा कोई बहते हुए ख़ून वाला जानवर कुँएँ में गिर कर मर जाए और फूलने फटने से पहले निकाल लिया जाए तो बीस डोल से तीस डोल तक पानी निकाला जाएगा। (बहारे शरीअ़त) और अगर बिल्ली, कबूतर, मुर्ग़ी या इतना ही बड़ा कोई दूसरा जानवर

कुँएँ में गिर कर मर जाए और फूले फटे नहीं तो चालीस डोल से साठ डोल तक पानी निकाला जाएगा।
(फ़तावा आ़लमगीर, बहारे शरीअ़त)

सवाल: डोल कितना बड़ा होना चाहिए?
जवाब: जो डोल कुँएँ में पड़ा रहता है वही डोल मुअ़तबर है और अगर कोई डोल कुँएँ के लिए ख़ास ना हो तो ऐसा डोल होना चाहिए कि जिसमें एक स़ाअ़ यानी तक़रीबन सवा पाँच किलो पानी आजाए।
सवाल: जितना पानी निकालना हो उतना पानी एक ही मर्तबा में निकालना ज़रूरी है या कई मर्तबा कर के भी निकालना जाइज़ है?
जवाब: बेहतर है कि कुल पानी एक ही मर्तबा में निकाल दिया जाए लेकिन अगर कई मर्तबा कर के निकाला जाए तो ये भी जाइज़ है। मसलन साठ डोल पानी निकालना है तो बीस सुबह को निकाला, बीस दोपहर को, और बीस शाम को। कुँएँ में बारह हाथ पानी है और कुल पानी निकालना है तो चार हाथ पानी आज निकाला। चार हाथ कल और चार परसों तो ये भी जाइज़ है। (बहारे शरीअ़त)

सवाल: कुआँ का पानी पाक हो जाने के बाद कुँएँ की दीवार और डोल रस्सी भी पाक करना पड़ेगा या नहीं?
जवाब: कुआँ की दीवार और डोल रस्सी नहीं पाक करना पड़ेगा। पानी के पाक होने के साथ ये चीज़ें भी पाक हो जाएंगी।

सवाल: कुल पानी निकालने का क्या मत़लब है

जवाबः कुल पानी निकालने का मत़लब ये है कि इतना पानी निकाल लिया जाए कि अब डोल डालें तो आधा भी ना भरे।

सवालः अगर पानी निकालना हो मगर कुआँ ऐसा हो कि पानी उस का टूटता ही ना हो तो इस सूरत में कुल पानी कैसे निकाला जाएगा।

जवाबः अगर कुँएँ का पानी टूटता ही ना हो तो कुल पानी निकालने का बेहतर त़रीक़ा ये है कि उस के पानी की गहराई बाँस या किसी दूसरी लकड़ी से सही त़ौर पर नाप लें और चंद आदमी बहुत फुर्ती से सौ डोल मसलन निकालें। फिर पानी नापें जितना कम हो उसी हिसाब से पानी निकाल लें। कुआँ पाक हो जाएगा। इस की मिसाल ये है कि पहली मर्तबा नापने से मअ़लूम हुआ कि पानी मसलन दस हाथ है। फिर सो डोल निकालने के बाद नापा तो नौ हाथ रहा तो मअ़लूम हुआ कि सौ डोल में एक हाथ कम हुआ तो दस हाथ में कुल दस सौ यानी एक हज़ार डोल हुए।

नमाज़ के वक़्तों का बयानः

सवालः रात और दिन में कितने वक़्तों की नमाज़ पढ़ना ज़रूरी है?

जवाबः रात और दिन में कुल पाँच वक़्तों की नमाज़ पढ़ना ज़रूरी है।

सवालः वो पाँच वक़्त कौन कौन से हैं?

जवाबः वो पाँच वक़्त ये हैं फ़ज्र ज़ुहर, अस्र, मग़रिब, इशा।

सवालः फ़ज्र का वक़्त कब से कब तक रहता है?
जवाबः उजाला होने से फ़ज्र का वक़्त शुरु होता है और सूरज निकलने से पहले तक रहता है। जब सूरज का ज़रा सा किनारा भी निकल आता है तो फ़ज्र का वक़्त ख़त्म हो जाता है।

सवालः ज़ुहर का वक़्त कब से कब तक रहता है?
जवाबः ज़ुहर का वक़्त सूरज ढलने के बाद शुरु होता है और ठीक दोपहर के वक़्त किसी चीज़ का जितना साया होता है। उस के इलावा उसी चीज़ का दो गुना साया हो जाए तो ज़ुहर का वक़्त ख़त्म हो जाता है।

सवालः अस्र का वक़्त कब से कब तक रहता है?
जवाबः ज़ुहर का वक़्त ख़त्म हो जाने से अस्र का वक़्त शुरु हो जाता है और सूरज डूबने से पहले तक रहता है।

सवालः मग़रिब का वक़्त कब से कब तक रहता है?
जवाबः मग़रिब का वक़्त सूरज डूबने के बाद से शुरु हो जाता है और शुमालन जनूबन जो फैली सफ़ेदी के ग़ायब होने से पहले तक रहता है।
सवालः इशा का वक़्त कब से कब तक रहता है?
जवाब' इशा का वक़्त शुमालन जनूबन फैली सफ़ेदी के ग़ायब होने से शुरु होता है और सुब्ह उजाला होने से पहले तक रहता है।

मकरूह वक़्तों का बयान:

सवाल: क्या रात और दिन में कुछ वक़्त ऐसे हैं जिनमें नमाज़ पढ़ना जाइज़ नहीं है?

जवाब: जी हाँ सूरज निकलने के वक़्त, सूरज डूबने के वक़्त और दोपहर के वक़्त किसी क़िस्म की कोई नमाज़ पढ़ना जाइज़ नहीं हाँ अगर उस रोज़ अस्र की नमाज़ नहीं पढ़ी तो सूरज डूबने के वक़्त पढ़ ले मगर इतनी ताख़ीर करना सख़्त गुनाह है। (बहारे शरीअ़त)

सवाल: सूरज निकलने के वक़्त कितनी देर नमाज़ पढ़ना जाइज़ नहीं?

जवाब: जब सूरज का किनारा ज़ाहिर हो उस वक़्त से लेकर तक़रीबन बीस मिनट नमाज़ पढ़ना जाइज़ नहीं। (फ़तावा रज़विय्यह)

सवाल: दोपहर के वक़्त और सूरज डूबने के वक़्त कब से कब तक नमाज़ पढ़ना जाइज़ नहीं है?

जवाब: जब सूरज पर नज़र ठहरने लगे उस वक़्त से लेकर डूबने तक नमाज़ पढ़ना जाइज़ नहीं और वक़्त भी तक़रीबन बीस मिनट है- (फ़तावा रज़विय्यह)

सवाल: दोपहर के वक़्त कब से कब तक नमाज़ पढ़ता जाइज़ नहीं?

जवाबः निस्फ़ुन्नहार से निस्फ़ुन्नहार ह़क़ीक़ी तक नमाज़ पढ़ना जाइज़ नहीं। जिसका बयान बहारे शरीअ़त में पढ़ोगे।

तअ़दाद रकअ़त और नीयत का बयानः

सवालः फ़ज्र के वक़्त कितनी रकअ़त नमाज़ पढ़ी जाती है?
जवाबः फ़ज्र के वक़्त कुल चार रकअ़त नमाज़ पढ़ी जाती है। पहले दो रकअ़त सुन्नत, फिर दो रकअ़त फ़र्ज़।

सवालः दो रकअ़त सुन्नत की नीयत किस त़रह़ की जाती है?
जवाबः फ़ज्र के वक़्त दो रकअ़त सुन्नत की नीयत इस त़रह़ की जाती है। नीयत की मैंने दो रकअ़त नमाज़ सुन्नत फ़ज्र की अल्लाह तआ़ला के लिए, सुन्नत रसूल अल्लाह की मुँह मेरा काबा शरीफ़ की त़रफ़ अल्लाहु अकबर।

सवालः फिर दो रकअ़त फ़र्ज़ की नीयत कैसे की जाती है?
जवाबः नीयत की मैंने दो रकअ़त फ़र्ज़ नमाज़े फ़ज्र की अल्लाह तआ़ला के लिए, (अगर मुक़तदी हो तो इतना और कहे पीछे इस इमाम के)मुँह मेरा काबा शरीफ़ की त़रफ़ अल्लाहु अकबर।

सवालः ज़ुहर के वक़्त कितनी रकअ़त नमाज़ पढ़ी जाती है?
जवाबः ज़ुहर के वक़्त कुल बारह रकअ़त नमाज़ पढ़ी जाती है पहले चार रकअ़त सुन्नत, फिर चार रकअ़त फ़र्ज़, फिर दो रकअ़त सुन्नत, फिर दो रकअ़त नफ़्ल।

सवाल: चार रकअ़त सुन्नत की नीयत किस त़रह़ की जाती है?
जवाब: ज़ुहर के वक़्त चार रकअ़त सुन्नत की नीयत इस त़रह़ की जाती है नीयत की मैंने चार रकात नमाज़ सुन्नत ज़ुहर की अल्लाह तआ़ला के लिए सुन्नत रसूल अल्लाह की मुँह मेरा काबा शरीफ़ की त़रफ़ अल्लाहु अकबर

सवाल: फिर चार रकअ़त फ़र्ज़ की नीयत कैसे की जाती है?
जवाब: नीयत की मैंने चार रकअ़त नमाज़ फ़र्ज़ ज़ुहर की अल्लाह तआ़ला के लिए (अगर मुक़तदी हो तो इतना और कहे पीछे इस इमाम के) मुँह मेरा काबा शरीफ़ की त़रफ़ अल्लाहु अकबर।

सवाल: फिर दो रकअ़त सुन्नत की नीयत किस त़रह़ की जाती है?
जवाब: नीयत की मैंने दो रकअ़त नमाज़ सुन्नत ज़ुहर की अल्लाह तआ़ला के लिए सुन्नत रसूल अल्लाह की मुँह मेरा काबा शरीफ़ की त़रफ़ अल्लाहु अकबर।

सवाल: फिर दो रकअ़त नफ़्ल की नीयत कैसे की जाती है?
जवाब: नीयत की मैंने दो रकअ़त नमाज़ नफ़्ल अल्लाह तआ़ला के लिए, मुँह मेरा काबा शरीफ़ की त़रफ़ अल्लाहु अकबर।

सवाल: क्या नफ़्ल में वक़्त की नीयत नहीं की जाती है?
जवाब: नहीं नफ़्ल में वक़्त की नीयत नहीं की जाती है।

सवाल: अस्र के वक़्त कितनी रकअ़त नमाज़ पढ़ी जाती है?

जवाब' अस्र के वक़्त कुल आठ रकअ़त नमाज़ पढ़ी जाती है। पहले चार रकअ़त सुन्नत फिर चार रकअ़त फ़र्ज़।

सवाल: अस्र के वक़्त चार रकअ़त सुन्नत की नीयत किस त़रह़ की जाती है?
जवाब: नीयत की मैंने चार रकअ़त नमाज़ सुन्नत अस्र की अल्लाह तआ़ला के लिए सुन्नत रसूल अल्लाह की मुँह मेरा काबा शरीफ़ की त़रफ़ अल्लाहु अकबर।

सवाल: फिर चार रकअ़त फ़र्ज़ की नीयत कैसे की जाती है?
जवाब: नीयत की मैंने चार रकअ़त नमाज़ फ़र्ज़ अस्र की अल्लाह तआ़ला के लिए (अगर मुक़तदी हो तो इतना और कहें पीछे इस इमाम के)मुँह मेरा काबा शरीफ़ की त़रफ़ अल्लाहु अकबर।

सवाल: मग़रिब के वक़्त कितनी रकअ़त नमाज़ पढ़ी जाती है?
जवाब: मग़रिब के वक़्त की कुल सात रकअ़त नमाज़ पढ़ी जाती है। पहले तीन रकअ़त फ़र्ज़ फिर दो रकअ़त सुन्नत फिर दो रकअ़त नफ़्ल।

सवाल: तीन रकअ़त फ़र्ज़ की नीयत किस त़रह़ की जाती है?
जवाब: नीयत की मैंने तीन रकअ़त नमाज़ फ़र्ज़ मग़रिब की अल्लाह तआ़ला के लिए (अगर मुक़तदी हो तो इतना और कहे पीछे इस इमाम के)मुँह मेरा काबा शरीफ़ की त़रफ़ अल्लाहु अकबर।

सवाल: और मग़रिब के वक़्त दो रकअ़त सुन्नत की नीयत कैसे करे?
जवाब: नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़ सुन्नत मग़रिब की अल्लाह तआ़ला के लिए सुन्नत रसूल अल्लाह की मुँह मेरा काबा कि शरीफ़ की त़रफ़ अल्लाहु अकबर।

सवाल: फिर दो रकअ़त नफ़्ल की नीयत कैसे की जाती है?
जवाब: नीयत की मैंने दो रकअ़त नमाज़ नफ़्ल अल्लाह तआ़ला के लिए मुँह मेरा काबा शरीफ़ की त़रफ़ अल्लाहु अकबर।

सवाल: इशा के वक़्त कितनी रकअ़त नमाज़ पढ़ी जाती है?
जवाब: इशा के वक़्त कुल सत्तरह रकअ़त नमाज़ पढ़ी जाती है। पहले चार रकअ़त सुन्नत, फिर चार रकअत फ़र्ज़, फिर दो रकअ़त सुन्नत फिर दो रकआ़त नफ़्ल, उस के बाद तीन रकअ़त वित्र वाजिब, फिर दो रकअ़त नफ़्ल।

सवाल: इशा के वक़्त चार रकअ़त सुन्नत की नीयत किस त़रह़ की जाती है?
जवाब: नीयत की मैंने चार रकअ़त नमाज़ सुन्नत इशा की अल्लाह तआ़ला के लिए सुन्नत रसूल अल्लाह की मुँह मेरा काबा शरीफ़ की त़रफ़ अल्लाहु अकबर।

सवाल: फिर चार रकअ़त फ़र्ज़ की नीयत कैसे करे?

जवाबः नीयत की मैंने चार रकअ़त नमाज़ फ़र्ज़ इशा की अल्लाह तआ़ला के लिए (अगर मुक़्तदी हो तो इतना और कहे पीछे इस इमाम के) मुँह मेरा काबा शरीफ़ की त़रफ़ अल्लाहु अकबर।

सवालः फिर दो रकअ़त सुन्नत की नीयत किस त़रह़ की जाती है?
जवाबः नीयत की मैंने दो रकअ़त नमाज़ सुन्नत इशा की अल्लाह तआ़ला के लिए सुन्नत रसूल अल्लाह की मुँह मेरा काबा शरीफ़ की त़रफ़ अल्लाहु अकबर

सवालः फिर दो रकअ़त नफ़्ल की नीयत कैसे करे
जवाबः नीयत की मैंने दो रकअ़त नमाज़ नफ़्ल अल्लाह तआ़ला के लिए मुँह मेरा काबा शरीफ़ की त़रफ़ अल्लाहु अकबर।

सवालः फिर वित्र की नीयत किस त़रह़ की जाती है!
जवाबः नीयत की मैंने तीन रकअ़त नमाज़ वाजिब वित्र की अल्लाह तआ़ला के लिए (और अगर रमज़ान के महीना में इमाम के पीछे पढ़ रहा हो तो इतना और कहे पीछे इस इमाम के)मुँह मेरा काबा शरीफ़ की त़रफ़ अल्लाहु अकबर

सवालः फिर दो रकअ़त नफ़्ल की नीयत कैसे करे?
जवाबः नीयत की मैंने दो रकअ़त नमाज़ नफ़्ल अल्लाह तआ़ला के लिए मुँह मेरा काबा शरीफ़ की त़रफ़ अल्लाहु अकबर।

सवाल: दिल में है कि फ़ज्र की नमाज़ पढ़ रहे हैं मगर ज़बान से निकल गया ज़ुहर या दिल में है कि अस्र की नमाज़ पढ़ रहे हैं लेकिन ग़लती से कह दिया इशा तो फ़ज्र और अस्र की नमाज़ हो
गी या नहीं।
जवाब: हो जाएगी। (दुर्रे मुख़्तार, बहारे शरीअ़त)

सवाल: दिल में है कि फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ रहे हैं लेकिन ज़बान से नफ़्ल या सुन्नत का लफ़्ज निकल गया तो फ़र्ज़ नमाज़ होगी या नहीं?
जवाब: फ़र्ज़ नमाज़ हो जाएगी। (बहारे शरीअ़त)

सवाल: दिल में है कि चार रकअ़त फ़र्ज़ पढ़ रहा है और ज़बान से निकल गया दो रकअ़त मगर उसने चार रकअ़त पढ़ कर सलाम फेरा तो चार रकअ़त फ़र्ज़ होगी या नहीं?
जवाब: चार रकअ़त फ़र्ज़ नमाज़ हो जाएगी। (बहारे शरीअ़त)

इस्लामी आदाब:

क़ुरआन शरीफ़ पर किताब वग़ैरह कोई चीज़ हरगिज़ ना रखो, मसअला मसाइल की किताबों पर भी दवात और क़लम-दान वग़ैरह कोई चीज़ ना रखो, दूसरी किताबों का भी अदब करो, उन्हें पांव के पास ना रखो, पांव से ना ठुकराओ, उन्हें ज़मीन पर ना रखो, ख़ूब सँभाल कर रखो, चीर फाड़ कर ख़राब ना करो अपने इम्ला और

नक़ल वग़ैरह की कापीयां दूकानदारों को हरगिज़ ना दो उन्हें किसी महफ़ूज़ जगह में गाड दो क़ुरआने मजीद या किताब वग़ैरह का टुकड़ा ना फेको और किसी जगह पड़ा हुआ देखो तो उठा कर किसी अच्छी जगह रख दो कि पांव के नीचे ना आए, बे-अदबी से बचे पारा और क़ुरआन मजीद रेह़ल वग़ैरह या किसी ऊंची चीज़ पर रख कर पढ़ो टाट या चटाई पर उसे हरगिज़ ना रखो और पढ़ने के बाद अलमारी या ताक़ वग़ैरह किसी ऊंची जगह में रखो, और क़ुरआन शरीफ़ ख़त्म हो जाने के बाद भी रोज़ाना सुब्ह को पढ़ा करो और तिलावत शुरू करने से पहले
"अऊ़ज़ु बिल्लाहि मिनश् शैता-निर्रजीमि, और बिस्मिल्लाह-हिर्रहमा-निर्रहीम" पढ़ लिया करो।

ह़ज़रात अंबिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलाम के नाम अदब से लो , नाम से पहले ह़ज़रत और नाम लेने के बाद अलैहिस-सलाम कहो, उनकी शान में कोई ऐसा लफ़्ज ना बोलो कि जिससे बे-अदबी का शुबहा हो और ह़ज़रात औलिया-ए-किराम रह़मतुल्लाहि अ़लैहिम के नाम भी अदब से लू। उनकी शान में किसी क़िस्म की गुस्ताख़ी और बे-अदबी हरगिज़ ना करो अहले सुन्नत व जमात के आलिमों से अदब के साथ मिलो उनसे सलाम और मुसा़ह़फ़ा करो और कभी कभी उनकी मजलिस में बैठा करो, और देवबंदी वहाबी, राफ़िज़ी वग़ैरह गुमराह फ़िर्क़ों और उनके मौलवियों से दूर रहो कि उनके साथ

उठने बैठने से ईमान का ख़तरा है। अच्छे आदमी को दोस्त बनाओ बुरे आदमी से दोस्ती हरगिज़ ना करो । ताड़ी और शराब पीने वालों के पास मत बैठो उनसे दूर रहो। नाच और सिनेमा के क़रीब हरगिज़ मत जाओ नज़्म और नात शरीफ़ पढ़ो । गाना मत गाओ और रेडीयो से गाना बजाना मत सुनो, बीड़ी और सिगरेट पीने की आ़दत मत डालो माँ बाप को सलाम करो अस्सलामु अ़लैकुम कहो, हाथ या उंगली के इशारा से सलाम ना करो और मदरसा में पहुचो तो उस्ताद को सलाम करो और वापिस आओ तो फिर सलाम करो। जो मुसलमान ज़ाहिर में नेक हो उसे सलाम करो वहाबी, देवबंदी और राफ़िज़ी वग़ैरा गुमराह फ़िर्क़ा के लोगों को सलाम हरगिज़ ना करो जब तुम्हें कोई सलाम करे तो व'अलैकुम अस्सलाम कहो। हाथ या उंगली के इशारा से सलाम का जवाब नहीं होगा। सलाम करना सुन्नत है और सलाम का जवाब देना वाजिब यानी ज़रूरी है अगर कोई काफ़िर या बद मज़हब तुम्हें सलाम करे तो हदाक अल्लाह कहो।

जो शख़्स नमाज़ या क़ुरआन पढ़ रहा हो उसे सलाम ना करो जो लोग क़ुरआन शरीफ़ या वअ़ज़ सुनने और सुनाने में मशग़ूल हो उन्हें भी सलाम ना करो। जो शख़्स वज़ीफ़ा में हो उसे सलाम ना करो और जो लोग इल्मे दीन पढ़ने या पढ़ाने में मशग़ूल हों उन्हें भी सलाम ना करो जो शख़्स़ पाख़ाना पेशाब कर रहा हो या खाना खा

रहा हो तो उसे सलाम ना करो और अज़ान और तकबीर के वक़्त किसी को सलाम ना करो

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत:

दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले पर ख़ुदा-ए-तआ़ला अपनी रहमतें नाज़िल फ़रमाता है उस के माल और औलाद में बरकत देता है उस के गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमाता है। उस के मर्तबा को ज़्यादा बुलंद कर देता है और अल्लाह तआ़ला उस से बहुत ख़ुश होता है नाराज़ नहीं होता।

दुरूद शरीफ़:

(1) صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَ اٰلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمْ ، صَلَاةً
وَّ سَلَامًا عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه

(2) اللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَ مَولَانَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا وَ
مَولَانَا مُحَمَّدٍ وَ بَارِكْ وَسَلِّمْ

(3) اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَ مَوْلَانَا مُحَمَّدٍ
وَ عَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا وَ مَولَانَا مُحَمَّدٍ مَعْدَنِ الْجُوْدِ وَ الْكَرَمِ وَ
بَارِكْ وَسَلِّمْ

कुछ और दुआएं:

(1) मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त ये दुआ़ पढ़ो:

اللّٰهُمَّ افْتَحْ لِي أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ

(2) मस्जिद से निकलते वक़्त ये दुआ़ पढ़ो।ل:

اَللّٰهُمَّ اِنِّي أَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ وَرَحمَتِكَ

(3) चांद देख कर ये दुआ़ पढ़ो:

اللّٰهُمَّ أَهِلَّهُ عَلَيْنَا بِالْأَمْنِ وَالْإِيمَانِ وَالسَّلَامَةِ وَالْإِسْلَامِ رَبِّي

وَرَبُّكَ اللّٰهُ يَا هِلَالُ

(4) जब आसमान से तारा टूटता देखो तो निगाह नीची कर लो और ये दुआ़ पढ़ो:

مَا شَاءَ اللّٰهُ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِٱللّٰهِ

(5) कश्ती पर सवार होते वक़्त ये दुआ पढ़ो:

بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرِهَا وَمُرْسَاهَا إِنَّ رَبِّي لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ

(6) मोटर ट्रेन रिक्शा वग़ैरह पर सवार होते वक़्त ये दुआ़ पढ़ो:

سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَذَا، وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ وَإِنَّا إِلَى رَبِّنَا

لَمُنْقَلِبُونَ

(7) जब बुरा ख़्वाब देखो और बेदार हो जाओ तो तीन बार तअ़व्वुज़ यानी "अऊ़ज़ु बिल्लाहि मिनश् शैता-निर्रजीमि" पढ़ो और तीन बार बाएं त़रफ़ थूको फिर सोना चाहो तो करवट बदल कर सो जाओ।

(8) जब सो कर उठो तो ये दुआ़ पढ़ो:

الحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي أَحْيَانَا بَعْدَ مَا أَمَاتَنَا وَإِلَيْهِ النُّشُورُ

(9) इस्तिंजा ख़ाना में दाख़िल होने से पहले ये दुआ़ पढ़ो।

اللّٰهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَائِثِ

(10) इस्तिंजा खाना से निकल कर ये दुआ़ पढ़ो:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي أَذْهَبَ عَنِّيَ الْأَذَى وَعَافَانِي

(11) बदन में किसी जगह दर्द हो तो उस मुक़ाम पर दाहिना हाथ सात मर्तबा फेरो और ये दुआ पढ़ो:

أَعُوذُ بِعِزَّةِ اللّٰهِ وَقُدْرَتِهِ مِن شَرِ مَا اَجِدُ

(12) अंधे लंगड़े कोढी वग़ैरह किसी मुसीबत-ज़दा को देखो तो ये दुआ़ पढ़ो:

الحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي عَافَانِي مِمَّا ابْتَلَاكَ بِهِ، وَفَضَّلَنِي عَلَى كَثِيرٍ مِمَّنْ خَلَقَ تَفْضِيلًا

इस्लामी कलिमे मुतर्जम:

अव्वल कलिमा त़य्यब:

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ (ﷺ)

तर्जुमा: अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं और ह़ज़रत मुह़म्मद मुस्त़फ़ा ﷺ ख़ुदा-ए-तआ़ला के रसूल हैं।

दूसरा कलिमा शहादत:

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

तर्जुमा: मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि ह़ज़रत मुह़म्मद मुस्त़फ़ा ﷺ ख़ुदा-ए-तआ़ला के प्यारे बंदे और उस के रसूल हैं।

तीसरा कलिमा तमजीद:

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْم

तर्जुमा: ख़ुदा-ए-तआ़ला हर ऐ़ब से पाक है और सब तअ़रीफ़ अल्लाह तआ़ला के लिए और ख़ुदा-ए-तआ़ला के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं और अल्लाह तआ़ला सबसे बड़ा है और त़ाक़त और क़ुव्वत देने वाला सिर्फ़ ख़ुदा-ए-बुज़ुर्गो व बर-तर है।

चौथा कलिमा तौहीद:

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ وَهُوَ حَيٌّ لَّا يَمُوْتُ اَبَدًا اَبَدًا ؕ ذُو الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ ؕ بِيَدِهِ الْخَيْرُ ؕ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ؕ

तर्जुमा: अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं वो अकेला है उस का कोई साझी नहीं उसी के लिए बादशाहत है और उसी के लिए तअ़रीफ़ है। वही ज़िंदगी देता है और वही मौत देता है। और वो ज़िंदा है कभी नहीं मरेगा। उसी के दस्ते क़ुदरत में हर क़िस्म की भलाई है और वो सब कुछ कर सकता है।

पांचवा कलिमा इस्तिग़फ़ार:

اَسْتَغْفِرُ اللّٰہَ رَبِّیْ مِنْ کُلِّ ذَنْۢبٍ اَذْنَبْتُہٗ عَمَدًا اَوْ خَطَأً سِرًّا اَوْ
عَلَانِیَۃً وَّاَتُوْبُ اِلَیْہِ مِنَ الذَّنْۢبِ الَّذِیْٓ اَعْلَمُ وَمِنَ الذَّنْۢبِ
الَّذِیْ لَآ اَعْلَمُ اِنَّکَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُیُوْبِ وَسَتَّارُ الْعُیُوْبِ وَغَفَّارُ
الذُّنُوْبِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْمِ ط

तर्जुमा: में अल्लाह तआ़ला से बख़्शिश मांगता हूँ जो मेरा परवरदिगार है। हर गुनाह से जो मैंने किया ख़्वाह जान कर या बे-जाने। छिप कर या खुल्लम-खुल्ला और में उस की त़रफ़ तौबा करता हूँ उस गुनाह से जिसे मैं जानता हूँ और उस गुनाह से जिसे में नहीं जानता यक़ीनन तू हर ग़ैब को ख़ूब जानने वाला है और तू ही ऐ़बों को छिपाने वाला है और गुनाहों को बख़्शने वाला है। और गुनाहों से बाज़ रहने और नेकी की क़ुव्वत अल्लाह तआ़ला ही से है जो बुलंद मर्तबा वाला और अ़ज़मत वाला है।

छठा कलिमा रद्दे कुफ्र

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْۤ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ اَنْ اُشْرِكَ بِكَ شَيْئًا وَّاَنَاۤ اَعْلَمُ بِهٖ وَ
اَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَاۤ اَعْلَمُ بِهٖ تُبْتُ عَنْهُ وَ تَبَرَّأْتُ مِنَ الْكُفْرِ وَ
الشِّرْكِ وَ الْكِذْبِ وَ الْغِيْبَةِ وَ الْبِدْعَةِ وَ النَّمِيْمَةِ وَ الْفَوَاحِشِ وَ
الْبُهْتَانِ وَ الْمَعَاصِیْ كُلِّهَا وَ اَسْلَمْتُ وَ اَقُوْلُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ
رَّسُوْلُ اللّٰهِ ؕ

तर्जुमा: ऐ अल्लाह तआ़ला बे-शक में तेरी पनाह चाहता हूँ, तेरे साथ किसी को शरीक करने से कि जिसको मैं जानता हूँ और मअ़फ़ी चाहता हूँ मैं तुझ से उस चीज़ के बारे में कि जिसको में नहीं जानता हूं। तौबा की मैंने उस से और बेज़ार हुआ में कुफ्र से शिर्क से और झूट से और ग़ीबत से और बिदअ़त से और चुग़ली से और बे ह़याइयों से और बोहतान से और हर क़िस्म के गुनाहों से और इस्लाम लाया में और ईमान लाया में और मैं कहता हूँ कि ख़ुदा-ए-तआ़ला के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं और ह़ज़रत मुह़म्मद मुस्त़फ़ा ﷺ अल्लाह तआ़ला के रसूल हैं।

ईमाने मुजमल

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ كَمَا هُوَ بِاَسْمَائِهٖ وَ صِفَاتِهٖ وَقَبِلْتُ جَمِيْعَ اَحْكَامِهٖ،
اِقْرَارٌم بِاللِّسَانِ وَ تَصْدِيْقٌم بِالْقَلْبِ

तर्जुमा: ईमान लाया में अल्लाह तआ़ला पर जैसा कि वो अपने नामों और अपनी सि़फ़तों के
साथ है और मैंने उस के सब हुक्मों को क़ुबूल किया।

ईमाने मुफ़स्सल:

آمَنْتُ بِاللّٰہِ وملائکته وَکُتُبِه وَرَسُوْلِه وَالْیَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْقَدْرِ
خَیْرِه وَشَرِّه مِنَ اللّٰہِ تَعَالٰی وَالْبَعْثِ بَعْدَ الْمَوْتِ

तर्जुमा: ईमान लाया में अल्लाह तआ़ला पर और उस के फ़रिश्तों पर और उस की किताबों
पर, और उस के रसूलों पर और क़ियामत के दिन पर और इस बात पर कि तक़दीर की अच्छाई और बुराई अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से है और में इस बात पर ईमान लाया कि मरने के बाद दुबारा ज़िंदा होना है।

تمت بالخیر

हिंदी ज़ुबान में हमारी दूसरी किताबें और रसाइल :

बहारे तहरीर (अब तक 13 हिस्सों में)
अल्लाह त'आला को ऊपरवाला या अल्लाह मियाँ कहना कैसा?
अज़ाने बिलाल और सूरज का निकलना
इश्के मजाज़ी - मुंतखब मज़ामीन का मजमुआ
गाना बजाना बंद करो, तुम मुसलमान हो!
शबे मेराज गौसे पाक
शबे मेराज नालैन अर्श पर
हज़रते उवैस क़रनी का एक वाकिया
डॉक्टर ताहिर और वक़ारे मिल्लत
ग़ैरे सहाबा में रदिअल्लाहु त'आला अन्हु का इस्तिमाल
चंद वाकियाते कर्बला का तहक़ीक़ी जाइज़ा
बिंते हव्वा
सेक्स नॉलेज
हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम के वाकिये पर तहक़ीक़
औरत का जनाज़ा
एक आशिक़ की कहानी अल्लामा इब्ने जौज़ी की ज़ुबानी
40 अहादीसे शफा'अत
हैज़, निफ़ास और इस्तिहाज़ा का बयान बहारे शरीअत से

ABOUT US

Abde Mustafa Official Is A Team
From **Ahle Sunnat Wa Jama'at**
Working **Since 2014** On The Aim To Propagate
Quraan And Sunnah
Through Electronic And Print Media.

We are :

Writing articles, composing & publishing books, running a special **matrimonial service** for Ahle Sunnat

Visit our official website :

www.abdemustafa.in
about thousand of articles & 150+ tehqeeqi pamphlets & books are available in Urdu, Roman Urdu & Hindi

E Nikah Matrimony

www.enikah.in
If you are searching a Sunni Life Partner then visit and find.
there is also a channel on Telegram
t.me/Enikah (Search "E Nikah Service" on Telegram)

Find & Follow us on Social Media Network :

Subscribe us on YouTube | abdemustafaofficial
Facebook & Instagram | abdemustafaofficial
Telegram Channel | t.me/abdemustafaofficial
Books Library on Telegram | t.me/abdemustafalibrary
or search "Abde Mustafa Official" on Google
for more details WhatsApp on **+919102520764**

SABIYA
SABIYA VIRTUAL PUBLICATION

POWERED BY ABDE MUSTAFA OFFICIAL
AMO